727.

Foll. 287-304. Adityahridayastotramantras, Solis orientis colendi ritus et preces, a Krishna cum Arjuna communicatae. Incipit: ज्ञां जस्य श्रीसिवतासूर्यनारायणकव-चस्तोत्तमंत्रस्य ब्रह्मा ज्ञृषिः etc. Praemissa lorica libellus, disticha 154. continens, ab his versibus incipit: ज्ञज्ञैन उवाच ॥ ज्ञानं च धर्मशास्त्राणां गुह्माहुद्यतरं तथा। मया कृषण परिज्ञातं वाङ्मयं सचराचरं ॥१॥ सूर्यस्तुतिनयं न्यासं वक्षमहिस माधव।
भक्त्या पृद्यामि देवेश कथयस्व प्रसादतः ॥२॥ सूर्यभिक्तं करिष्णामि कथं सूर्य प्रपूचयेत्। तदहं श्रोतुमिन्ञामि त्वत्रप्रसादेन यादव ॥३॥
श्रीभगवानुवाच ॥ स्ट्राद्दिवतैः सर्वैः पृष्टेन कथितं मया। वस्त्ये हं कमिवन्यासं शृणु पांडव यह्नतः ॥४॥

Subscriptione quidem libellus e Bhavishyottarapurána excerptus esse dicitur. De exemplaribus Berolinensibus cf. Weber Catal. p. 351. (Wilson 531g.)

728.

Foll. 326b-328. Dattátreyáshtottaraşatanámastotram, Dattátreyae centum et octo nomina, caput ex omnifaria farragine illa, vulgo Brahmándapurána appellata, prolatum. Incipit: सों सस्य श्रीदत्तात्रेयाष्ट्रोत्तरज्ञतनामस्तोत्त-मंत्रस्य बद्धा विष्णुमहेश्वर सृिष:। श्रीदत्तात्रेयो भगवान् देवता ममा-भीष्टिसिद्धर्थे जपे विनियोग:॥ etc. खनुसूयासुतो देवो खतीपुतो महा-मृित:। योगींद्रपुरुषपुरुषो देवेशो जगदीश्वर:॥ २॥

Haec nomina distichis 20. absolvuntur. (WILSON 53¹.)

729.

Foll. 211-214. Linn. 11. Bhairavastotram, Bhairavae colendi ritus et preces, e Rudrayámala desumtae. Incipit: ओं मेरुपृष्टे मुखासीनं। देवदेवं तिलोचनं। शंकरं परि-पप्रछ। पावैती परमेश्वरं ॥१॥ श्रीपावित्युवाच ॥ भगवन्सविधमेतः। सर्वेशास्त्रागमादिषु ॥ आपदुद्धारणं मंतं। सर्वेसिद्धिप्रदं नृणां ॥२॥ सर्वेषां चैव भूतानां। हिताणे वांछितं मया ॥ विशेषतस्तु राज्ञां वे। शांतिपुष्टिप्रसाधनं ॥३॥ अंगन्यासकरन्यास। देहन्याससमन्वितं। वक्नु-महिंस देवेश। मम हर्षेविचर्छनं ॥४॥

Praemissis Tántrikorum formulis, Bhairavae centum et octo nomina traduntur.

Haec folia medio seculo superiore exarata sunt. (Walker 129g.)

730.

Foll. 226-237. Gaṇapatistotráṇi, Gaṇeṣae colendi preces, e variis fontibus derivatae.

a. Foll. 226-228b. Ekáksharaganapatikavacham e

Rudrayámala sumtum. Incipit: नमस्तस्मै गणेशाय। सर्व-विग्नविनाशिने। कार्यारंभेषु सर्वेषु पूज्यते यः सुरैरिप ॥१॥ श्रीदेयु-वाच ॥ भगवान् देवदेवेश । लोकानुग्रहकारकः। त्वत्प्रसादात्रणेशस्य। श्रुतः पूजाविधिनया ॥२॥ इदानीं श्रोतुमिद्यामि। कवच परमोत्तमः। एकाश्चरस्य मंत्रस्य त्वयामीतेन चेतसा ॥३॥

- b. Fol. 228b. Gaṇapatyárádhanam, Kankolae vati tributum.
- c. Foll. 229^a-232^a. Ganapatistavarájas. Incipit: भ्रोँ भ्रोँ भ्रोँकारबीनं सहिमित च परं ब्रह्म तृरीयं.
- d. Fol. 232^a-232^b. Sachchidánandastotram e Sanatkumárasamhitá excerptum. Incipit: गजवदनमचित्रं तीक्ष्णदंतं त्विनेत्वं। वृहदुदरमशेषं भूतराजं पुराणं।
- e. Foll. 232^b-233^b. Gaņeṣabhujangaprayátastotram, Ṣankarácháryae tributum, distichis octo constans. Incipit: क्षेर्म मां गं गर्ज कम्वक्कं गणेशं। भुजाकंकणै: शोभितं धूम-केतुं। गले हारमुक्काफलाशोभवंतं। नमो ज्ञानरूपं गणेशं नमस्ते॥१॥
- f. Foll. 233^b-237^b. Vakratundastotram, Vyásae tributum. Haec pars a numero c. leviter tantum differt. Incipit: श्री क्षे अस्य वक्रतुंडमंत्रस्य वेदव्यास कृषि, etc. (Walker 129ⁱ.)

731.

Foll. 296-315. Rámagítá (Rámae carmen) continent. Incipit: गर्रोशं कमलानायं प्रशिपत्य गुरो: पदं। करिष्य (shye) रामगीतायां व्याल्यानं वालवृद्धये ॥१॥ Neque tamen carminis commentarius, sed carmen ipsum, disticha 75. continens, sequitur. Distt. 2-63. ex Adhyátmarámáyana desumta sunt (Uttarakánda, sarga 5). Ráma coram Lakshmana summum bonum relictis operibus in meditando numine positum esse exponit: तस्मास्यजेत्कार्यमशेषतः सुधीविद्याविरो-धान (n na) समुख्यो भवेत्। ज्ञात्मानुसंधानपरायणः सदा निवृत्त-सवेंद्रियवृत्तिगोचर: ॥१९॥ Quae Vedántica opinio ad Rámae cultum deflectitur: यावन पश्येदिखलं मदात्मकं तावन्मदाराध-नतत्परो भवेत् । श्रद्धालुरत्यूर्जितलञ्चणो यस्तस्य दृश्योऽहमहर्निशं हृदि ॥ ५२॥ भ्रातर्यदीदं परि दृश्यते जगत् मायैव सर्वे परिहृत्य चेतसा। मङ्गावनाभावितज्ञुद्धमानसः सुखी भवानंदमयो निरामयः ॥ ६१॥ Quae post dist. 63. sequuntur, Brahmani deo tribuuntur, et sollennem carminis panegyricum continent. (MILL 112g.)

732.

Foll. 317-346. Rámamantrapatalam, Rámae adorandi libellum, continent. Et preces et ceremoniae ad Rámae cultum pertinentes traduntur, quae mutatis mutandis cum solitis Indorum orthodoxorum formulis consentiunt. Praeter Rámánujam, Nímánujam, Mádha-